साहित्य अकादेमी

"नलिन विलोचन शर्मा जन्मशतवार्षिकी समारोह" : एक रपट

साहित्य अकादेमी और हिंदी विभाग बी.आर. अम्बेदकर बिहार वि.वि., मुजफ्फपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'नलिन विलोचन शर्मा जन्मशतवार्षिकी 29 जुलाई 2016 के समारोह में प्रो. गोपेश्वर सिंह ने रोचक ढंग से नलिन विलोचन शर्मा के जीवन और कृतित्व पर बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि नलिन जी को लंबी उम्र नहीं मिली। मात्र साढ़े पैंतालिस साल में उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन कम उम्र के बावजूद कविता, कहानी, आलोचना, निबंध, जीवनी आदि अनेक विधाओं में उन्होंने भरपूर लेखन किया। लेकिन हिंदी साहित्य में उनकी सबसे बड़ी देन आलोचना के क्षेत्र में है। मौलिक दृष्टि और चिंतनपूर्ण लेखन के द्वारा उन्होंने आलोचना का नया मानदंड निर्मित किया। नलिन जी ही प्रपद्यवाद के प्रवर्तक थे। प्रपद्यवाद को नकेनवाद भी कहा जाता है। प्रपद्यवाद छायावाद की तरह कोई स्वत:स्फूर्त आंदोलन नहीं था। यह एक संगठित और सुविचारित काव्यांदोलन था। यह संगठन मात्र तीन कवियों का था—नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार और नरेश। ये तीनों ही पटना में रहते थे। हिंदी कविता को अपनी प्रपद्यवादी कविताओं के जरिए विश्व कविता के बौद्धिक धरातल तक ले जाना चाहते थे। वे कविता में भावुकता के विरोधी थे और उसमें बौद्धिकता तथा वैज्ञानिकता के योग से नयापन पैदा करने के पक्षधर थे।

समारोह के अध्यक्षीय व्याख्यान में अकादेमी के अध्यक्ष और वरिष्ठ कवि प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने नलिन जी के जीवन से संबंधित कुछ रोचक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नलिन जी के पिता महामहोपाध्याय पं. रामावतार शर्मा अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे और संस्कृत के प्रकांड पंडित, जिन्होंने एक बार परीक्षा में उत्तर लिखते वक्त ऋगवेद में अपना एक स्वरचित श्लोक लिखकर कॉपी जांचने वाले विद्वानों को परेशानी में डाल दिया था और बाद में बताया कि यह उनका स्वरचित है। समारोह का पहला सत्र नलिन विलोचन शर्मा के व्यक्तित्व और

कृतित्व पर केन्द्रित था। जिसमें ऋता शुक्ल ने नलिन जी से अपने पारिवारिक संबंधों के बारे में बताते हुए कुछ दिलचस्प संस्मरण सुनाए। अमिताभ राय और तरुण कुमार ने नलिन जी के आलोचनात्मक पक्ष को सामने रखा। साधना अग्रवाल ने नलिन जी के व्यक्त्वि के कुछ रोचक प्रसंगों के बारे में बताया। साथ ही कहा कि नलिन जी जब आचार्य शिवपूजन सहाय के साथ 'साहित्य' पत्रिका का संपादन करते थे तो प्रमादवश अपने द्वारा की गई गलती को उन्होंने स्वीकार करने में हिचक महसूस नहीं की। सत्र की अध्यक्षता कर रहे रामवचन राय ने अनोखे अंदाज में नलिन के विषय में जानकारी दी। अगला और अंतिम सत्र प्रपद्यवाद और नलिन विलोचन शर्मा पर केन्द्रित था। जिसमें प्रो. सत्यकाम और नंदकिशोर नंदन को नलिन जी के प्रपद्यवाद में कोई नवीनता और मौलिकता दिखाई नहीं दी। जबकि ठीक इसके उलट सुरेन्द्र स्निग्ध ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन युवा कवि और अकादेमी के संपादक कुमार अनुपम ने किया और धन्यवाद प्रो. रेवती रमण ने।

इसी विशेष अवसर पर साहित्य अकादेमी से गोपेश्वर सिंह द्वारा संपादित "नलिन विलोचन शर्मा रचना संचयन" का लोकार्पण भी किया गया।